



**Original Article**

## 21 सी सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर समस्याएँ

डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद

सहयोगी प्राध्यापक

डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव, जि. सातारा

Manuscript ID:

IJAAR-C130348

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 241 - 246

Submitted: 1 Feb. 2026

Revised: 11 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

**Corresponding Author:**

डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786309

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786309>



Creative Commons



### प्रस्तावना:

21 सी सदी में वैश्वीकरण सूचना प्रौद्योगिकी और मानव अधिकार विमर्श के विस्तार के बावजूद किन्नर ट्रांसजेंडर समुदाय सामाजिक, आर्थिक, शिक्षित तथा राजनीतिक स्तर पर अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्राचीन ग्रंथों जैसे महाभारत, रामायण में इसका उल्लेख मिलता है। जहाँ उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का अंग माना गया। मध्यकाल में भी उन्हें सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। किंतु औपनिवेशिक शासन के दौरान 1871 के क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट ने इस समुदाय को अपराधी घोषित कर सामाजिक बहिष्कार को संस्थागत रूप दिया। स्वतंत्र भारत में संविधान में समानता का अधिकार प्रदान किया, परंतु सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन अपेक्षित गति से नहीं हुआ।

2014 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए ऐतिहासिक निर्णय (एन ए एल एस ए बनाम भारत सरकार) ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को तीसरे लिंग के रूप में मान्यता दी तथा 2019 में पारित 'ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम' ने उनके अधिकारों की रक्षा हेतु कानूनी आधार प्रदान किया। इसके बावजूद शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक स्वीकृति और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे क्षेत्रों में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

**मुख्य शब्द:** किन्नर, ट्रांसजेंडर, सामाजिक बहिष्कार, लैंगिक पहचान, मानवअधिकार, संवेदनशीलता।

### Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

### How to cite this article:

डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद. (2026). 21 सी सदी के हिंदी साहित्य में किन्नर समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 241 - 246. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786309>

21वीं सदी ज्ञान, विज्ञान, तंत्रज्ञान की सदी है। जिस कारण मनुष्य ने उत्कर्ष के कई शिखर प्राप्त किए हैं। आज की भौतिकवादी तथा पूँजीवादी युग में एक और अर्थ ही मूल्य बन

गया है। तो दूसरी ओर तकनीकी तथा डिजिटल टेक्नोलॉजी का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। हर क्षेत्र में मनुष्य तरक्की की होड़ में अग्रसर हो रहा है। किंतु इस सदी में एक वर्ग ऐसा भी है जिसे



आज भी उपेक्षा, अपमान, अमानवीयता की दृष्टि से देखा जाता है। उसका दोहन तथा शोषण आज भी जारी है। हाशिए पर धकेल दिए इस वर्ग के प्रति आत्मीयता, सहानुभूति तथा मान्यता की आवश्यकता है। परंतु उनके प्रति असंवेदनशीलता, तिरस्कार, प्रताड़ना निरंतर जारी है। किन्नर और समाज की मानसिकता को बदलने के लिए उन्हें संविधान ने दिए अधिकारों के प्रति जागृत करना होगा। साथ ही किन्नरों के प्रति न्यायिक भावना लेकर उन्हें और हमें 'मानवतावादी होने के लिए प्रेरित करना होगा।

यह तो सर्वाविदित है कि साहित्य किसी भी समस्या को उजागर करने का सबसे सशक्त माध्यम है। जब हाशिए का समाज सामने आया तो समाज की मुख्य धारा से काटा किन्नर वर्ग भी साहित्यकारों की नजरों से नहीं बच पाया, इस वर्ग के प्रति लोगों में संवेदना जागी। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में यह समुदाय उभर कर सामने आने लगा। अनेक उपन्यासकारों ने किन्नर समाज को अपने उपन्यासों का विषय बनाया। साथ ही कविताओं में भी किन्नर की समस्याओं पर चित्रण किया जाने लगा। इस वर्ग की त्रासदी पूर्ण पीड़ा के प्रति गीतिका वेदिका लिखती है। "न ही नारी हूँ, मैं और नर नहीं हूँ, विवश हूँ, मूक हूँ, पत्थर नहीं हूँ।

21वीं सदी नए समस्याओं को उजागर करने की सदी है। इसका प्रतिबिंब साहित्य में भी मिलता है। वर्तमान समय में किन्नर विमर्श के माध्यम से उनकी विविध समस्याएँ समाज के समुख आने लगी है। 15 अप्रैल 1914 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय द्वारा इस समुदाय को कानूनी तौर पर मान्यता मिली। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और राज्य सरकारों को शिक्षा और नौकरी में अर्थात् थर्ड जेंडर को वरियता देने के निर्देश दिए हैं। इस निर्णय में किन्नर वर्ग को समाज की मुख्य प्रवाह में लाने का काम किया है। तब से साहित्य के क्षेत्र में भी

किन्नरों के जीवन तथा उनकी समस्याओं, मजबूरियों तथा शोषण को लेकर लेखन हो रहा है। आज कई साहित्यकार उनके प्रति संवेदनशील, आत्मीयता तथा सहानुभूति पूर्व लिख रहे हैं। इन साहित्यकारों में डॉ. निरजा माधव, डॉ. अनुसुईया त्यागी, महेंद्र भीष्म, प्रदीप सौरभ, निर्मला भुराडिया, चित्र मृदुल, विवेक मिश्रा, पंकज बिष्ट आदि प्रमुख हैं। अनेक पत्रिकाओं जैसे वांग्मय में और जनकृति पत्रिका का एक अंक ही किन्नर समुदाय के जीवन के बारे में सबके समक्ष जानकारी के लिए रखा गया है। संगोष्ठियों के द्वारा भी किन्नरों को समाज के केंद्र स्थान में लाने का प्रयास जारी हो चुका है। किन्नरों की समस्या एवं संवेदना को साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से पड़ताल की जा रही है।

भारतीय समाज की संरचना विविधताओं पर आधारित है। यहाँ धर्म, भाषा, संस्कृति और जातीय विविधता के साथ-साथ लैंगिक विविधता भी विद्यमान रही है। किन्नर समुदाय भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में लैंगिक विविधता को स्वीकार किया गया है। महाभारत में शिखंडी और बृहन्नला जैसे पात्र तथा रामायण में किन्नरों की उपस्थिति इस बात का संकेत देती है कि समाज में उनकी अपनी पहचान थी।

मध्यकालीन भारत में मुगल दरबारों में किन्नरों को प्रशासनिक दायित्व भी दिए जाते थे। किंतु औपनिवेशिक काल में 1871 के क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट के तहत हिजड़ा समुदाय को संदिग्ध और अपराधी श्रेणी में रखा गया। इससे सामाजिक कलंक और बहिष्कार की प्रक्रिया तेज हुई।

21वीं सदी की मानव अधिकार आंदोलन, सामाजिक जागरूकता और न्यायिक हस्तक्षेपों ने किन्नरी की स्थिति पर पुनर्विचार प्रारंभ किया। 1914 का नालसा निर्णय ऐतिहासिक



मिल का पत्थर सिद्ध हुआ। इसके बावजूद चुनौतियाँ अभी भी गंभीर हैं।

किन्नर समस्याओं से संबंधित साहित्यकारों में नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास 2002 में प्रकाशित किया गया है। यह उपन्यास भारतीय हिंदी साहित्य में किन्नर जनजीवन को प्रकाश में लाने वाला पहला उपन्यास है। जिसमें किन्नरों के जीवनी का संवदनात्मक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। यह एक प्रतिकात्मक उपन्यास है, जो किन्नरों के प्रति मानवतावादी रूप को दर्शाता है। यमदीप पूरी तरह से किन्नरों पर आधारित उपन्यास लिखा गया है, जिसमें उनके चरित्र, उनके प्रकार, समाज का इन के प्रति रवैया, सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष इत्यादि का विस्तार से वर्णन किया गया है। उपन्यास में नायिका नंदारानी उर्फ नाजबीबी के माध्यम से परिवार का किन्नर बच्चे के प्रति अपमानजनक व्यवहार को दर्शाया गया है। नाजबीबी के नंदन भाईय ने समाज में बदनामी की डर से रिश्ता ही खत्म कर लिया है। नंदन ने नाजबीबी से कहा कि, "देखो तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना हमारी इज्जत को तो बढ़ाता नहीं है, उल्टे तुम्हें भी दुःख होता है, और मम्मी पापा को भी। तुम परिवार में रह नहीं सकती, हम रख भी नहीं सकते। इसलिए यह समझ लो तुम की अनाथ हो। कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में।" केवल एक किन्नर को ही नहीं उसके परिवार को भी समाज से तिरस्कार एवं अपमान सहन करना पड़ता है, जो असहनीय होता है। इसमें यह समझाया गया है कि किन्नर को समाज में अछुत मानकर बहिष्कृत कर दिया जाता है। सामाजिक अवहेलना के डर से परिवार उनसे सारे रिश्ते - नाते खत्म कर देते हैं, तथा जिस प्रकार 'यम' के दीप को जलाकर कूड़े के घुरे पर रखने के बाद मुड़कर नहीं देखा जाता, ठीक उसी प्रकार किन्नर बालक को भी परिवार अपने से दूर किन्नर बस्ती में छोड़ने के बाद मुड़कर नहीं देखते।

उपन्यास में लेखिका ने वाम मार्ग पर जाने वाले किन्नरों का भी चित्रण किया है। अपने गुरुद्वारा बहिष्कृत किया जाने पर वह गलत मार्ग की ओर आकृष्ट होते हैं। नाजबीबी कहती हैं- हम लोग हिजड़े हुए तो क्या हुआ, हमारे भी कुछ वसूल है। हम वेश्या थोड़ी ही है?" बहिष्कृत किया जाने के कारण पेट की आग बुझाने के लिए देह व्यापार करते हैं। उपन्यास में चमेली, मंजू जैसे चरित्र भी वाम मार्ग पर जाने के लिए विवश हो जाते हैं। यह सभी किन्नर गुरु के उपदेशों के कारण अंत में सही रास्ते पर भी आते हैं। किन्नर की मनोदशा का अत्यंत मार्मिक तथा हृदयद्रावक चित्रण एवं उसका यथार्थ जीवन इस उपन्यास में व्यक्त हुआ है। तात्पर्य यह उपन्यास एक तरह से किन्नरों के जीवन का जिवंत दस्तावेज है।

चित्रा मृदूल स्त्रियों पर लिखने वाली एक महान लेखिका है। उन्होंने किन्नर जीवन के समस्याओं पर 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 : नालासोपारा' उपन्यास लिखा। इस उपन्यास को 2018 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। इसमें उन्होंने सच्चे अर्थ में लिंग दोषी समाज की समस्याओं को अत्यंत मानवतावादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उपन्यास के बारे में चित्रा जी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि- "मैं मुंबई के नालासोपारा में रहती थी, तब मेरा साबका एक ऐसे युवक से हुआ, जिसे किन्नर होने की वजह से जबरिया घर से निकाल दिया गया था। यह उपन्यास इस युवक के विद्रोह की कहानी है। वह युवक अपने परिवार खासकर अपनी माँ से सवाल करता है कि, लंगड़ा, लूला, बहरा, मानसिक रूप से विकलांग बच्चों को तो आप घर से बाहर नहीं निकाल देती, लेकिन अगर मैं लिंग से विकलांग पैदा हुआ, जिसमे मेरा कोई दोष भी नहीं है, तो मुझे घर से बाहर क्यों निकाल दिया गया।"

इस उपन्यास में नायक विनोद किन्नर अपनी माँ का पता लगाकर उसके साथ पत्र व्यवहार करता है। माँ भी चुपके से



अपने बच्चों को पत्र लिखती है। परंतु वह चाहती है कि इस बात का पता किसी को भी ना चले, ताकि परिवार की बदनामी ना हो या दूसरे बच्चों की शादियों में अड़चन न आए। इस में पारिवारिक समस्याओं के साथ-साथ समाज से बहिष्कृत होना तथा समाज द्वारा बार-बार अपमानित होने का भी चित्रण किया गया है। लेखिका ने इसमें किन्नर समाज के साथ होने वाले शोषण को भी दर्शाया है। राजनीतिक नेता अपने वोट बैंक बढ़ाने के लिए किन्नरों का एक मोहरे की तरह इस्तेमाल करते हैं। मनोरंजन के रूप में किन्नर को अपनाते हैं। किन्नर बस्ती में सरदार, सायरा, चंद्र पूनम जोशी है। जिसने पूनम के मन में विनोद के लिए स्त्री सुलभ आकर्षण है। पुनम भी एक किन्नर है। वह विनोद अर्थात बिन्नी के लिए पैसे इकट्ठा कर उसे पढ़ना चाहती है। विधायक जी के साक्षात्कार करवाती है। पूनम बिन्नी पर एक सखी और माँ के रूप में प्रेम जताती है। विधायक के नालायक भतीजे बिल्लू और उसके दोस्त की कामुकता के कारण पूनम जोशी लहलुहान हो जाती है, क्योंकि विधायक का भतीजा और उसके दोस्त पूनम जोशी के साथ बलात्कार करते हैं। पूनम बेहाल हो तड़पती रहती है, पर उस पर किसी को भी दया नहीं आती। यहाँ समाज के लोगों की हैवानियत तथा पशुता का व्यवहार को भी बखूबी अंकित किया है।

भगवत अनमोल कृत "जिंदगी 50-50" (2017) में किन्नरों के जीवन संघर्ष, मुख्य धारा के समाज को अमानवीय व्यवहार एवं शोषण का चित्रण है। उपन्यास में अनमोल और अनाया किन्नर वर्ग का प्रतिनिधित्व है। मुख्य धारा के समाज को जैसे ही बच्चों के किन्नर होने की भनक मिलती है, वह मानसिक प्रताड़ना देना शुरू कर देता है। इस उपन्यास में इस यथार्थ से रूबरू कराता वक्तव्य इस प्रकार है -" पर एक बात तो नोट कर ले तिवारी। हिजड़े का बाप है तू हिजड़े का! और इतना आसान न है समाज में हिजड़े का बाप बनकर जीना। सुई की

नोक पर रहना होता है। इसकी चुभन से तेरा पैर ही नहीं, तेरा शरीर नहीं, तेरी आत्मा तक तड़पेगी। यह समाज तुझे जीने ना देगा, या तो तू खुद मर जाएगा, या फिर तंग आकर खुद चलते हुए उस बच्चों को यहाँ देने आएगा।"

किन्नर अनेक पूर्व गृह से ग्रसित है। लोगों में यह बात को लेकर भी भ्रम रहता है, कि किन्नर सामान्य व्यक्ति को पकड़ कर भी हिजड़ा बना देते हैं। लेकिन ऐसा करना किन्नर समुदाय पाप मानता है। अनमोल और अन्य के समानांतर ही हर्ष और सूर्य की कथा चलती है। तथाकथित समाज किन्नर बच्चे के पिता को भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से इतना पीड़ित करता है कि जन्मदाता स्वयं ही अपने बच्चों को मौत के मुँह में डालने का प्रयास करता है। जैसे -" प्रकृति सहम गई थी, हवाओं ने भी दिशा बदल ली थी, इंसानियत शर्मसार हो गई थी, जब एक बाप ने बच्चों की गर्दन पकड़ ली थी।"

रेनू बहल कृत उपन्यास "मेरे होने में क्या बुराई है" में पुरुष शरीर में स्त्री भावनाएं होने पर आधारित है। शेखर से सीखा बनी तृतीयलिंगी मानव का वक्तव्य- आठवीं कक्षा तक आते-आते मेरी चाल ढाल, बात करने का अंदाज, रज्जों- रस्म की पाबंदी, तौर तरीकों में बदलाव आ चुका था। दूसरे लड़कों की तरह मेरे शारीरिक अंग पूरी तरह उभरे नहीं थे। ऐसा महसूस होता था, जैसे मर्द के जिस्म में औरत की रूह कैद हो। मोहल्ले के, स्कूल के बच्चे मुझे छक्का कहकर छेड़ने लगे। मेरा मजाक उड़ाते, मगर मुझे किसी तरह से उनका तंग करना नागवार न गुजराता, परंतु अम्मा अब्बा परेशान रहने लगे थे। मुझे नहीं मालूम उन्हें लोगों की क्या बातें सुनाई पड़ी, मगर इतना जरूर था कि अब्बा और मेरे बीच दूरियाँ बढ़ती जा रही थी। रेनू ने इस में किन्नर द्वारा भोगे जाने वाले कष्ट का वर्णन किया है। हमेशा हंसमुख दिखने वाले किन्नर अपने भीतर गहरा दुख दर्द समेटे रहते हैं।



निर्मला भूराडिया कृत ' गुलाम मंडी' सन 2014 में प्रकाशित उपन्यास है। किन्नर के जीवन की भयावहता को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। मानव तस्करी जैसी अंतरराष्ट्रीय समस्या, देह व्यापार के लिए युवतियों को फसाना, उनका शोषण एवं संघर्षरत जीवन, प्रशासन तथा पुलिस की क्रूरता, जेल में हुआ अत्याचार, नशाखोरी, अपने ही परिवारों के लोगों द्वारा किन्नरों का अपमान, तिरस्कार, आदि विविध सामाजिक विकृतियों तथा पहेलियों का बेबाक चित्रण किया गया है।" ज्वलंत विषय के बहाने उन्होंने कोशिश की है कि इसके आसपास और साथ-साथ की जो विकराल समस्याएँ हैं उन्हें भी वाणी दे। 'गुलाम मंडी' में समाज के सर्वाधिक तिरस्कृत वर्ग किन्नर से लेकर जिस्म फरोशी और मानव तस्करी की भयावह दुनिया को भी उकेरा गया है। गुलाम मंडी का कथानक तीन महिला पात्रों कल्याणी, जानकी (जेन ) और अंगूरी के बीच घूमता है। कल्याणी बचपन से बुढ़ापे की दहलीज तक खुद को सुंदर बनाए रखने के लिए चिकित्सा का सहारा लेती है। उपन्यास के केंद्र में दूसरी समस्या जानकी जेन के माध्यम से मानव तस्करी की उठाई है। आर्थिक रूप से कमजोर होना लक्ष्मी और जानकी के लिए अभिशाप बनता है। तीसरी केंद्रीय समस्या तीसरे जेंडर के अंतर्गत ट्रांसजेंडर और ट्रांस सेक्सुअल हिजड़ा, समुदाय से जुड़ी है। यह समुदाय समाज के तय शुदा खांचों में नहीं आता है। इसी कारण समाज द्वारा लंबे समय तक बहिष्कृत और उपेक्षित रहता है। इस अभ्यास में अंगूरी के माध्यम से लेखिका इस समाज की समस्या को केंद्र में लाती है। सत्ता चाहे पूंजी की हो या पितृसत्ताक की, वह अपने स्वार्थ के लिए जीती है। उपयोग और उपयोगिता की तर्ज पर जिसने एक पूरे समुदाय को ही मुख्य धारा से अलग कर दिया है। अंगूरी का व्यक्तित्व समाज की इसी उपेक्षा को सामने लाता है और

मनुष्यता के तकाजे पर मनुष्य होने के अधिकार की मांग करता है।

#### **निष्कर्ष:**

किन्नरों की नरकीय जीवन में व्याप्त घृणा, अपमान, घुटन और इससे बाहर निकालने की बेचैनी क्या होती है इसका सफल चित्रण विविध उपन्यासों में किया गया है। इन सबसे मुक्ति की कामना करता यह समाज आज अपने सम्मान और अधिकारों की मांग के लिए अपनी झोली फैलाए खड़ा है। जिसे हमारे समर्थन की आवश्यकता है। किन्नर समुदाय को मानवाधिकारों के अनुसार मनुष्यत्व का स्थान मिलना अत्यंत आवश्यक है। जिससे वे समाज के मुख्य धारा प्रभाव में अपना स्थान बना सके। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अनुसार उन्हें शिक्षा और नौकरी में वरियता देना जरूरी है। साथ ही उनकी और आत्मीयता, सहानुभूति तथा मानवीयता की दृष्टि से देखना आवश्यक हो जाता है। उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने की भी आवश्यकता पर जोर दिया जाना जरूरी है। उन्हें आर्थिक, सामाजिक दृष्टि से सक्षम होना होगा, ताकि देह व्यापार की स्थिति से वह बाहर निकल सके। समाज के हर क्षेत्र में वह अपना स्थान निर्माण कर सके। जरूरत है सिर्फ समाज की मानसिकता में बदलाव लाने की।

#### **संदर्भ सूत्र:**

1. नीरज माधव, 'यमदीप' सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021 पृ. सं. 82
2. उपर्युक्त, पृष्ठ सं ८७
3. 'तहलका', समाज और संस्कृति, अमित सिंह 20 मई 2016



4. चित्र मृदुल, ' पोस्ट बॉक्स नंबर 203: नालासोपारा'  
सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016
5. भगन्वत अनमोल, - 'जिंदगी 50-50', राजपाल एंड  
सन्स, नई दिल्ली, पृ. सं. 35
6. उपर्युक्त पुष्ट सं. 40
7. निर्मला बुराडिया, ' गुलाम मंडी' , साहित्य प्रकाशन नई  
दिल्ली 2016 पृ. संख्या 69
8. डॉ. गुरेमकोंडा नीरजा, 'सागरिका', ब्लॉग, समसामयिक  
हिंदी साहित्य, 3 जनवरी 2019